16

परमेश्वर का अद्‌भुत ''गिनती करने का प्रबन्ध''

(4:1-3, 5)

हम रोमियों 4 का अध्ययन आरम्भ करने को तैयार है, जिसमें विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की पौलुस की चर्चा का सार है। यह पाठ अध्याय के आरम्भ की कुछ आयतों पर केन्द्रित है और इसके परिचय के रूप में काम करेगा।

मैं ''गिना गया'' शब्द पर विशेष ध्यान देना चाहता हूं: ''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता *गिना गया*'' (आयत 3ख)। ''गिना गया'' का अनुवाद *logizomai* से किया गया है। अध्याय 4 में पौलुस ने ग्यारह बार *logizomai* विभिन्न रूपों में इस्तेमाल किया है। इस अध्याय में NASB में इस शब्द का इस्तेमाल आयत 8 को छोड़ जहां इसका अनुवाद ''take into account'' है ''credits'' या ''credited'' हुआ है।[1] *Logizomai* का मूल *logo* ''मैं कहता हूं'' है और यह शब्द *logos* (''वचन'') से जुड़ा है। पौलुस के समय में इसके कई अर्थ थे,[2] परन्तु इसका मूल अर्थ ''गिनना, हिसाब लगाना, ... गणना करना'' है।[3]

Logizomai लेखाकार का शब्द था। अधिकतर लेखक इस बात से सहमत हैं कि रोमियों 4 में पौलुस ने इसका इस्तेमाल इसी प्रकार किया। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है, ''इसका अर्थ 'जमा करना' या 'हिसाब लगाना' और आर्थिक या वाणिज्यिक सम्बन्ध में इस्तेमाल करने पर इसका अर्थ किसी के खाते में कुछ डालना होता है।''[4] इसी कारण CJB में आयत 3 का अनुवाद है: ''[अब्राहम] ने अपना भरोसा परमेश्वर पर रखा और यह धार्मिकता के रूप में उसके खाते में जुड़ गया था।'' मैं इस पाठ का नाम ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' '' रख रहा हूं। ई. डी. बर्टन ने सुझाव दिया है कि रोमियों 4 में हम ''महान लेखाकार के गिनती करने वाले कमरे'' में हैं।[5]

मेरी प्रार्थना है कि मैं आप तक वह ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' '' पहुंचा सकूं। यह आप को अपने मसीही जीवन का नया दृष्टिकोण देकर आपके परेशान मन को आनन्दित कर सकता है।

''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया'' (4:1-3)

एक सम्माननीय उदाहरण (आयत 1)

अध्याय 4 का आरम्भ होता है, ''सो हम क्या कहें ...?'' ''क्या'' 3:21-26 में विश्वास से धर्मी ठहराए जाने पर पौलुस के परिचय कथन को कहा गया है। ''सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक[6] पिता[7] अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ?'' (4:1)। अध्याय 4 में पौलुस की टिप्पणियां

मुख्यतया यहूदी पाठकों की थीं। यहूदी लोग गर्व से अब्राहम को अपना ''शारीरिक पिता'' मानते थे (देखें लूका 3:8; 16:24, 30; यूहन्ना 8:39, 53, 56; प्रेरितों 7:2)।[8]

मूल धर्मशास्त्र में, ''शारीरिक'' के तुरन्त बाद ''हमारा पिता''[9] है और यहीं पर अधिकतर अनुवाद इसे रखते हैं। ऐसा होने से यह इस बात का संकेत देता है कि अब्राहम यहूदी कौम का ''शारीरिक'' पूर्वज था। परन्तु कई लोगों का मानना है कि ''शारीरिक'' को सुधारकर ''found'' होना चाहिए (देखें ASV) जो लगता तो कम है पर हो सकता है। वास्तव में यह पौलुस को यह कहते दिखाएगा, ''शारीरिक काम करके धर्मी ठहराए जाने के बारे में अब्राहम ने क्या पाया [यानी, अच्छाई के काम करके] ?''

विश्वास से धर्मी ठहराए जाने पर अपनी चर्चा में अब्राहम को लाने के पौलुस के कई कारण रहे होंगे। पहली बात तो यह कि किसी शिक्षक को कोई नियम दे दिए जाने के बाद उसे उस नियम का स्पष्ट उदाहरण देने का विचार अच्छा है। उदाहरणों को वे खिड़कियां कहा गया है, जिनमें से सच्चाई की रौशनी आती है।

उस उदाहरण के रूप में अब्राहम का इस्तेमाल क्यों? पौलुस पुराने नियम के कई नायकों में से किसी का भी इस्तेमाल कर सकता था (देखें इब्रानियों 11)। अब्राहम ही क्यों? यहूदी लोगों का ''पिता अब्राहम'' के लिए विशेष मोह था। वे उससे अधिक किसी और को सम्मान नहीं देते थे। यदि पौलुस यह साबित कर पाता कि यह अभेद्य पूर्वज विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया गया था तो वह यहूदियों के साथ अपने केस को आगे बढ़ा सकता था।

पौलुस ने अब्राहम को एक और कारण के लिए भी चुना हो सकता है। यदि यहूदियों को *अपने कामों* से उद्धार पाने का कोई *बहुत अच्छा* उदाहरण देने के लिए कहा जाता तो उनकी सबसे पहली पसन्द अब्राहम ही होती।

> यहूदी धर्म में अब्राहम के अति मूल्यांकन कठिन होगा। वह एक ऐसा नायक था जो मूर्तिपूजक लोगों के बीच में भी एक सच्चे परमेश्वर की उपासना करता था। उसके बारे में माना जाता था कि वह उसने परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञाओं से पहले ही उन्हें मान लिया था। इसहाक और याकूब के साथ उसे उन लोगों में माना गया जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया था।[10]

इसलिए यदि पौलुस यहूदियों को यह समझा देता कि अब्राहम अपने *कामों* के बजाय अपने *विश्वास* के आधार पर धर्मी ठहराया गया था तो यह प्रेरित ''कामों से धर्मी'' ठहराए जाने के उनके ''ज़बर्दस्त तर्कों में से एक को बेकार कर देता''!

एक उपुयक्त अवलोकन (आयत 2)

पौलुस अब्राहम के जीवन की समीक्षा करने को तैयार था। ''क्योंकि यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती'' (4:2क)। पौलुस ने अभी-अभी कहा था कि विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा ''घमण्ड करने को निकाल देती'' है (3:27)। वह अपने साथी यहूदियों के साथ सहमत होगा कि यदि किसी को अपने कामों पर घमण्ड करने का अधिकार था तो वह अब्राहम ही था। अब्राहम एक असाधारण व्यक्ति था। केवल वही एक ऐसा

व्यक्ति है जिसे परमेश्वर ने ''मेरा मित्र'' कहा है (यशायाह 41:8; देखें 2 इतिहास 20:7; याकूब 2:23)। यदि अब्राहम अपने कामों के आधार पर धर्मी ठहराया गया होता तो निश्चय ही वह घमण्ड कर सकता था। यह कहने के बाद पौलुस ने तुरन्त जोड़ा, ''परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं'' (रोमियों 4:2ख)।

लेखक ''परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं'' का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं। मूल धर्मशास्त्र में ''परमेश्वर [*Theou*] के साथ [*pros*] नहीं [*ou*]'' है।[11] शायद इसमें अन्तर की इच्छा की गई है: जहां तक *लोगों* की बात थी, अब्राहम के पास घमण्ड करने के लिए कुछ था; परन्तु जहां तक *परमेश्वर* की बात थी उसके पास घमण्ड करने का कोई कारण नहीं था। NLT में ''परमेश्वर दृष्टिकोण से अब्राहम के पास घमण्ड का कोई आधार नहीं था।''

हम सब को यह समझने की आवश्यकता है कि हम चाहे कितने भी भले क्यों न हों, हम चाहे कितने भी भलाई के काम क्यों न करते हों, परमेश्वर को हम कभी अपना कर्ज़दार नहीं बना सकते। अब्राहम यदि सिद्ध भी होता (जो कि वह था नहीं), तो ''परमेश्वर के दृष्टिकोण से'' उसमें घमण्ड करने की कोई बात नहीं थी। लूका 17:10 याद रखें: ''इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है।''

महत्वपूर्ण नियम (आयत 3)

किसी को इसमें संदेह नहीं था कि अब्राहम ''धर्मी ठहरा'' व्यक्ति था। प्रश्न यह था कि वह किस आधार पर धर्मी ठहराया गया था। यदि परमेश्वर ने अब्राहम के काम नहीं देखे और कहा, ''तुझे बचाने को इतना ही काफ़ी है,'' तो परमेश्वर ने पिता अब्राहम को किस आधार पर धर्मी *ठहराया*? पौलुस ने एक प्रसिद्ध वचन को उद्धृत किया: ''पवित्र शास्त्र क्या कहता है ?[13] यह कि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'' (4:3)। यह उदाहरण उत्पत्ति 15:6 से लिया गया है। रोमियों 4 में पौलुस ने इस आयत को कई बार दोहराया (आयतें 3, 9, 22, 23)। इस पाठ को उत्पत्ति 15:6 की व्याख्या के रूप में जाना जा सकता है।

उत्पत्ति 15 की पृष्ठभूमि पौलुस के पाठकों के लिए नई नहीं थी। आइए कहानी को दोहराते हैं। हारान में, जब अब्राहम पचहत्तर साल का था (उत्पत्ति 12:4) तब परमेश्वर ने उसे बताया, ''मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा'' (12:2क)। जब वह कनान देश में पहुंचा तब परमेश्वर ने कहा, ''यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा'' (12:7क)। इन प्रतिज्ञाओं में यह सूचना थी कि अब्राहम और उसकी पत्नी सारा के कम से कम *एक* बच्चा तो होगा। परन्तु कई साल बीत जाने पर भी अब्राहम और सारा नि:संतान रहे। जैसा कि कहावत है वे ''छोटे नहीं हो रहे थे'' अब्राहम को हैरानी होने लगी कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी (देखें 15:2, 3)।[14]

जब अब्राहम पचासी साल का हुआ (देखें उत्पत्ति 16:16), तो परमेश्वर ने उसे अतिरिक्त आश्वासन दिया। एक रात वह अब्राहम को तारों के नीचे घुमाने ले गया। उसने उसे बताया, ''आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है ?'' (15:5क)। उसने अब्राहम को यह आश्वासन दिया कि ''तेरा वंश ऐसा ही होगा'' (15:5ख)। मानवीय दृष्टिकोण से लगता था कि यह प्रतिज्ञा पूरी होनी असम्भव है। उस निर्णायक पल में अब्राहम ने

''यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना'' (15:6)।

उत्पत्ति 15:6 के सम्बन्ध में हमें दो तथ्यों को समझने की आवश्यकता है। पहला, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि अब्राहम ने यहां पहली बार परमेश्वर में विश्वास किया था। बहुत साल पहले परमेश्वर ने कसदियों के ऊर में अब्राहम को दर्शन दिया था[15] (प्रेरितों 7:2; देखें उत्पत्ति 15:7; नहेम्याह 9:7) और कहा, ''अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा'' (प्रेरितों 7:3)। हारान में यही निर्देश दोहराते हुए परमेश्वर ने उसे फिर दर्शन दिया (उत्पत्ति 12:1; देखें आयत 4)। इब्रानियों के लेखक ने कहा, ''*विश्वास ही से* अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया'' (इब्रानियों 11:8)। यही लेखक यह कहने के लिए आगे बढ़ा कि ''*विश्वास ही से* उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश [कनान] में वास किया'' (आयत 9क)। अब्राहम का पूरा जीवन परमेश्वर में उसके विश्वास पर आधारित था। रोमियों 1 में पौलुस के शब्दों का इस्तेमाल करें तो इस पुरखे का जीवन ''आरम्भ से अन्त तक विश्वास से'' ही चला (आयत 17; NIV)। इस कारण उत्पत्ति 15:6 अब्राहम के विश्वास के आरम्भ की ही बात नहीं है।

दूसरा हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि उत्पत्ति 15:6 अब्राहम के *आरम्भिक* धर्मी ठहराए जाने की यानी उस समय की, बात कर रही है, जिसमें (जैसा कि कुछ लोग कहते होंगे) वह ''बचाया गया।'' परमेश्वर यदि अब्राहम को अपना बालक न मानता तो उसने उसे पहले बहुत सी अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं नहीं देनी थीं। जब अब्राहम मलकिसिदक से मिला, तो उस राजा ने कहा था, ''परम प्रधान परमेश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्त्ता है, तू धन्य हो'' (14:19; NIV)। इसके थोड़ी देर बाद ही परमेश्वर ने स्वयं अब्राहम को बताया, ''हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और अत्यन्त बड़ा प्रतिफल मैं हूं'' (15:1)। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि अब्राहम उत्पत्ति 15:6 से पहले ही धर्मी ठहराया जा चुका था।

जब ये बातें सत्य थीं तो फिर पौलुस ने यह साबित करने के लिए कि अब्राहम विश्वास से धर्मी ठहराया गया उत्पत्ति 15:6 का इस्तेमाल क्यों किया? इसके चार कारण इस प्रकार हैं:

(1) बेशक परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने बाद में उत्पत्ति 15:6 से पहले अब्राहम के विश्वास की बात की, परन्तु बाइबल में यहां पहली बार बताया गया है कि अब्राहम ने यहां विश्वास किया। (वास्तव में बाइबल यहां पहली बार किसी के लिए ''विश्वास'' शब्द का इस्तेमाल करती है।[16])

(2) बेशक स्पष्ट तौर पर इस अवसर से पहले अब्राहम धर्मी ठहराया गया था, परन्तु उत्पत्ति की पुस्तक पहली बार उसके लिए ''धर्मी'' शब्द का इस्तेमाल करती है।

(3) यह आयत विशेषकर कहती है कि अब्राहम *अपने* विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया गया था।

(4) कालक्रम के अनुसार यह बात अब्राहम का खतना होने से चौदह या इससे अधिक वर्ष पूर्व (देखें उत्पत्ति 16:1, 16; 17:1, 9, 24) और मूसा के व्यवस्था देने से सैकड़ों वर्ष पूर्व (देखें गलातियों 3:16, 17) दी गई थी।

बेशक उत्पत्ति 15:6 एक विशेष समय के बारे में लिखा गया था, परन्तु *परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने इसे अब्राहम के पूरे जीवन के सार से मेल खाता देखा।* गलातियों 3:6-9 में पौलुस ने इस आयत को उत्पत्ति 12 में अब्राहम को पहले दी गई प्रतिज्ञा से जोड़ा। रोमियों 4 के पिछले भाग में पौलुस ने तारों भरी रात में परमेश्वर के साथ चलने के लगभग चौदह साल बाद अब्राहम को दी गई पुत्र की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में उत्पत्ति 15:6 को उद्धृत किया (रोमियों 4:18-22)। याकूब 2:21-24 में याकूब ने उत्पत्ति 15:6 को अब्राहम के वेदी पर अपने पुत्र को भेंट करने से जोड़ा।

पिछले पन्ने में दिया गया तीसरा कारण वास्तव में रोमियों 4 में पौलुस द्वारा उत्पत्ति 15:6 का इस्तेमाल करना चुनने का मुख्य कारण है। यह आयत विशेष रूप से कहती है कि अब्राहम अपने विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया गया था *और इसमें कामों का कोई उल्लेख नहीं है।* कई यहूदी शिक्षकों ने उत्पत्ति 15:6 को अपनी इस शिक्षा के अनुकूल बनाने का प्रयास किया था कि *अब्राहम अपने कामों के आधार पर धर्मी ठहराया गया था।* उन्होंने इस आयत का यह अर्थ निकाल लिया था कि ''अब्राहम परमेश्वर का *विश्वासयोग्य था* और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया था'' परन्तु यह आयत ऐसा नहीं कहती। यह कहती है, ''अब्राहम ने परमेश्वर पर *विश्वास किया,* और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।''

यहूदी लोग यह ज़ोर देते थे कि परमेश्वर ने अब्राहम को इसलिए चुना, क्योंकि वह अपने समय के लोगों में सबसे अच्छा था। और मैं इससे सहमत नहीं हूं। उन्होंने देखा कि अब्राहम सच्चे परमेश्वर के प्रकाश में चलता था जो कि शेष संसार मूर्तिपूजा के अंधकार में डूबा हुआ था, और यह सत्य है। उन्होंने मानवीय कारण के विरुद्ध होने के बावजूद परमेश्वर की आज्ञा मानने के नमूने के रूप में उसे रखा, और ऐसा करके उन्होंने सही किया। इस सब में वे सही थे। गलत वे तब हुए जब उन्होंने कहा कि अब्राहम मानवीय भलाई के आधार पर *धर्मी ठहराया गया* था। पौलुस ने घोषित किया कि ऐसा कुछ *नहीं* था। इसके बजाय ''अब्राहम ने परमेश्वर पर *विश्वास किया* और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।''

''और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'' (4:3, 5)

एक अद्‌भुत सच्चाई की घोषणा हुई

यह हमें अब्राहम के लिए और हमारे लिए परमेश्वर के ''हिसाब करने के प्रबन्ध'' तक ले आता है। आज जहां मैं रहता हूं वहां हिसाब-किताब अधिकतर कम्प्यूटर पर किया जाता है; जब मैं लड़का था उस समय हिसाब किताब बही-खातों में रखा जाता था। व्यवसायी लोग इन बही-खातों को ''किताबें'' कहते थे। ''किताबों'' में जानकारी डालने को ''किताबें रखना'' या बुक कीपिंग कहा जाता था। बही-खाते में खर्चों के लिए (बाहर जाने वाले धन) के लिए ''डेबिट'' कॉलम होता है 'आमदन' (आने वाले धन) के लिए ''क्रेडिट'' कॉलम होता है। बुक कीपर की एक ज़िम्मेदारी यह सुनिश्चित करना होता था कि दोनों कॉलम में समान राशि हो (''किताबों का संतुलन'' रखने के लिए)।

मैंने पहले कहा था कि मैंने अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) में रोमियों की

पुस्तक पर जे. डी. थॉमस की क्लास लगाई थी।[17] रोमियों 4 की चर्चा करते हुए भाई थॉमस बोर्ड की ओर मुड़ गए। उन्होंने एक बड़ा आयताकार कॉलम बनाया और उसके ऊपर लिख गया, ''परमेश्वर का बही-खाता'' फिर उन्होंने बाईं ओर ''डेबिट'' कॉलम बनाया और दाईं ओर ''क्रेडिट'' कॉलम बना दिया। ''डेबिट'' वाले कॉलम में उन्होंने ''पाप'' शब्द लिखा और ''x के'' चिह्न से आरम्भ करते हुए अब्राहम के जीवन के पाप की बात करने लगे।

अच्छा होने के बावजूद अब्राहम ने पाप किया था। अधिकतर यहूदी अब्राहम के पापों को अनदेखा (या नज़रअंदाज़) करना चुनते थे, परन्तु उसके जीवन की कहानी को सरसरी तौर पर पढ़ने से भी इन कमियों का पता चल जाता है। उदाहरण के लिए, भय के कारण अब्राहम ने राजाओं के साथ सारा के बारे में दो बार ''झूठ बोला'' (उत्पत्ति 12:10-20; 20:1-18)। कइयों का विचार है कि हाजिरा के साथ कठोरतापूर्वक व्यवहार की अनुमति देकर अब्राहम ने गलत किया था (16:6-14)। जैसा कि हम अगले एक पाठ में देखेंगे, चाहे अब्राहम का विश्वास था तौभी वह सिद्ध नहीं था। अन्य शब्दों में अब्राहम मुनष्य था और उसमें वे सब कमज़ोरियां थी जो मनुष्य में होती हैं।

अब तक भाई थॉमस ने अब्राहम के बही-खाते के ''डेबिट'' साइड में पापों (''x का'' जोड़ दिया) था। वह ''क्रेडिट'' कॉलम में आ गए। उन्होंने कहा, ''अब्राहम ने अच्छे काम भी किए, और परमेश्वर को वह पता था।'' उन्होंने उस कॉलम में दो ''x'' डाल दिए। परन्तु उन्होंने ज़ोर दिया कि अब्राहम के जीवन की भलाई चाहे कितनी भी हो वह उन पापों को जो उसने किए थे ''बराबर'' नहीं कर सकती थी। उन्होंने कहा, ''स्थिति निराशाजनक लगती थी।''

फिर भाई थॉमस ने हमें *logizomai* का अर्थ याद दिलाया। बोर्ड पर ''विश्वास'' शब्द जोड़ते हुए उन्होंने कहा, ''परमेश्वर ने क्रेडिट कॉलम में 'विश्वास' लिखा और उसने उसे धार्मिकता गिना, जैसे अब्राहम वैसा ही हो जो उसे होना चाहिए था।'' फिर ''क्रेडिट'' कॉलम के नीचे उन्होंने ''x का'' जोड़ लिख दिया ताकि ''पुस्तकों का जोड़ बराबर हो जाए।''

इस रेखाचित्र की कमियों के लिए भाई थॉमस ने क्षमा मांगी क्योंकि कोई उदाहरण भी सम्पूर्ण नहीं था। उन्होंने कहा, ''परन्तु मैं यह ज़ोर देने के लिए कि परमेश्वर ने अब्राहम की सम्पूर्ण आज्ञाकारिता नहीं चाही (जो उसमें थी भी नहीं), बल्कि उसके *विश्वास* की कामना की। जब उसने अब्राहम का विश्वास देखा, 'यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया' (ASV)। उसने उसके *विश्वास* को धार्मिकता गिना।'' फिर रुककर उन्होंने जोड़ा, ''यही वह आधार है जिससे तुम्हारा और मेरा उद्धार होता है।''

परमेश्वर का बही-खाता	
डेबिट	क्रेडिट
पाप xx xx xx	विश्वास xx
xxxxxxxxxx	xxxxxxxxxx

मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि जब उन्होंने यह सच्चाई पहली बार सुनी तो उन्होंने राहत की बड़ी सांस ली। स्पष्टतया उन्हें केवल न्याय करने वाले परमेश्वर का ही पता था और वे ''स्वर्ग में जाने के लिए कुछ करने'' के प्रति चिंतित थे। भाई थॉमस की क्लास में मुझे नहीं याद कि ऐसी कोई प्रतिक्रिया हुई हो। मुझे नहीं याद कि प्रभु को प्रसन्न करने के लिए ''कुछ करने'' की पहले चिंता की गई हो। उससे पीड़ित जिससे किसी ने ''सिद्धता का श्राप'' कहा है, मुझे मालूम था कि मैं वैसा नहीं हूं जैसा मुझे होना चाहिए। तौ भी मेरे माता-पिता और दूसरे लोग मुझे परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताते हैं। (मुझे यह भी मानना चाहिए कि, रोमियों पर क्लास लेने के समय मैं इनमें से कई चीज़ों से अनजान ही नहीं था बल्कि छोटा और जोश से भरा भी था जो अपने प्रभु के लिए बड़े-बड़े काम करने को तैयार था। मैं चिंता क्यों करूं?)

जो बात मुझे याद है, वह भाई थॉमस द्वारा अपना रेखाचित्र बनाने पर कुछ नया सीखने और अतिरिक्त समझ पाने को रोमांचकारी स्पर्श के साथ दिलचस्पी का अहसास है। शायद मैं कुछ संदेहवादी ही था। मेरा मन उस जानकारी की प्रक्रिया करने लगा, उस सब के विरुद्ध जो मैंने वचन से सीखा था (प्रेरितों 17:11)। धीरे-धीरे रोमियों 4 की पौलुस की शिक्षा का अध्याय खत्म हो गया। उसके बाद के वर्षों में इस महान अध्याय के लिए मेरी समझ बढ़ती रही।

ग्रेजुएट होकर फुल टाईम प्रीचिंग आरम्भ करने पर, जल्द ही यह साफ़ हो गया कि मसीह में मेरे बहुत से भाइयों और बहनों को रोमियों 4 की सच्चाइयों की आवश्यकता है। किसी सदस्य का यह पूछना रोज़ की बात थी कि ''आपको कैसे मालूम कि आपने स्वर्ग जाने के लिए कुछ किया है?'' इस प्रश्न का कि ''क्या आपका उद्धार हुआ है?'' अनिश्चित उत्तर यह होता था ''उम्मीद तो है।'' बाइबल क्लास के कई टीचर यूहन्ना के कथन को सझने की कोशिश करते थे। ''मैंने तुम्हें, ... इसलिए लिखा है; कि तुम *जानो,* कि अनन्त जीवन तुम्हारा है'' (1 यूहन्ना 5:13)। वे चकित होते थे कि पौलुस इतना आश्वस्त कैसे हो पाया कि ''भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन *देगा*'' (2 तीमुथियुस 4:8क)।

मुझे दिन-ब-दिन और पता चलता है कि परमेश्वर के सामने मेरी कारगुज़ारी कितनी नुक्सदार है। इसके अलावा समय बीतने के साथ मैंने एक बार विचार किया कि इतनी असीम ऊर्जा खत्म हो गई है। दिन-ब-दिन मैं इस तथ्य के लिए धन्यवाद करता हूं कि परमेश्वर मेरे अधूरे, अपर्याप्त, हमेशा नुक्सदार कामों को नहीं, बल्कि मेरे *विश्वास* को देखता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो!

एक गम्भीर प्रश्न पर विचार

क्या इसका अर्थ यह है कि कामों की आवश्यकता नहीं है। उत्पत्ति 15:6 को उद्धृत किया तो क्या पौलुस यह सिखाना चाहता था कि अब्राहम के काम अनावश्यक थे? बिल्कुल नहीं। थोड़ी देर मैंने लिखा था कि नये नियम के लेखक उत्पत्ति 15:6 को अब्राहम के जीवन का सार मानते थे। उन उदाहरणों को देखें जिनका वे इस्तेमाल करते थे। गलातियों 3:6-9 में पौलुस ने इस आयत को उत्पत्ति 12 में परमेश्वर के शब्दों से जोड़ दिया जहां परमेश्वर ने फिर अब्राहम को कनान में जाने के लिए बुलाया। उस बुलाहट के बारे में इब्रानियों के लेखक ने कहा, ''*विश्वास ही से* अब्राहम जब बुलाया गया तो *आज्ञा मानकर* ऐसी जगह निकल गया, जिसे मीरास में लेने वाला था''

(इब्रानियों 11:8क)। यदि अब्राहम आज्ञा *न* मानता तो क्या होता? क्या इसका अर्थ यह न होता कि उसने विश्वास *नहीं* किया?

रोमियों में पौलुस के दिमाग में मुख्यतया आयत का मूल संदर्भ था (4:10), परन्तु उसने चौदह साल बाद पुत्र की विशेष प्रतिज्ञा भी शामिल की (उत्पत्ति 4:19)। अब्राहम को पुत्र की गारंटी दी गई थी परन्तु अंततः इसहाक का जन्म कुंवारी से जन्म नहीं था। अब्राहम यदि उस प्रतिज्ञा के पूरा होने के लिए "केवल परमेश्वर में भरोसा रखकर" सारा से शारीरिक सम्बन्ध बनाने से इनकार कर देता तो? ऐसा कार्य (या निष्क्रियता) भी अविश्वास को ही दिखाता, विश्वास को नहीं।

याकूब द्वारा सदियों बाद इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया गया, जब परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करने के लिए कहा।[18] याकूब ने लिखा:

> जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों के धार्मिक न ठहरा था। सो तूने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ कि अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके लिए धर्म गिना गया (याकूब 2:21-23क)।

इस घटना के विषय में इब्रानियों के लेखक ने लिखा:

> विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला (इब्रानियों 11:17-19)।

जब परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र को बलिदान करने की आज्ञा दी, तो उस समय यदि वह इनकार कर देता तो? क्या यह स्पष्ट नहीं है कि ऐसा निर्णय परमेश्वर में "जो ऐसा सामर्थी है कि मरे हुओं को जिला सकता है" भरोसा दिखाने के बजाय विश्वास की कमी को दिखाना होता?

अब्राहम के कामों का महत्व उत्पत्ति 26 में इसहाक से कहे परमेश्वर के शब्दों में देखा जाता है:

> "... जो शपथ मैं ने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी, उसे मैं पूरी करूंगा। और मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करूंगा। और मैं तेरे वंश को ये सब देश दूंगा, और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी। *क्योंकि अब्राहम ने मेरी मानी,* और जो मैं ने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं विधियों, और व्यवस्था का पालन किया" (आयतें 3-5)।

हां, अब्राहम के काम महत्वपूर्ण थे। जब हम उस युग पर विचार करते हैं जिसमें अब्राहम रहता था और जिन परिस्थितियों में उसने परमेश्वर की सेवा की, तो परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरे

मन से उसे उसका मानना आश्चर्यजनक, बल्कि दंग करने वाला है। परन्तु दो मुख्य तथ्यों को न भूलें: (1) अब्राहम के कामों की बात करते हुए हम ''खूबी के कामों'' की बात नहीं बल्कि ''विश्वास के आज्ञापालन'' की बात कर रहे हैं। (2) अब्राहम के काम बेशक सराहनीय हैं परन्तु वे सिद्ध नहीं हैं। उसे फिर भी ''विश्वास के द्वारा ... अनुग्रह से'' बचाया जाना था (देखें इफिसियों 2:8क)। इस प्रकार पवित्र शास्त्र यह ज़ोर देता है कि ''अब्राहम ने परमेश्वर पर *विश्वास किया,* और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'' (रोमियों 4:3)।

अद्‌भुत सच्चाई व्यक्तिगत की गई

अब्राहम न केवल अपने विश्वास के आधार पर बचाया गया, बल्कि अगले पाठों में हम देखेंगे कि आपका और मेरा उद्धार पर उसी आधार पर होता है। हम भी ''परमेश्वर के अद्‌भुत 'हिसाब' के प्रबन्ध'' (देखें 4:5) से लाभ उठा सकते हैं। पौलुस ने लिखा, ''और यह वचन, कि विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया, न केवल [अब्राहम] के लिए लिखा गया। वरन हमारे लिए भी जिन के लिए विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात हमारे लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया'' (4:23, 24)। इस सच्चाई के समझ आ जाने पर हमारे जीवनों पर इसका बहुत असर होना चाहिए।

(1) *इसे हमें उम्मीद से भर देना चाहिए।* अप्रतिबद्ध और ठण्डे मसीही प्रभु के लिए ''कुछ करने'' की चिंता नहीं करते। इसके विपरीत विवेकी मसीही को अपने निकम्मेपन का अहसास है और वह इस बात को समझता है कि जो उसे होना चाहिए वह उससे बहुत कम है। क्या यह अहसास अद्‌भुत नहीं है कि परमेश्वर हमसे आज्ञापालन की मांग तो करता है, परन्तु वह *सिद्ध* आज्ञापालन की मांग नहीं करता? वह हमसे पूरी कोशिश करने की उम्मीद करता है, पर आज्ञापालन के पीछे का उद्देश्य उसका सबसे बड़ा लगाव हमारा *विश्वास* है। विलियम बार्कले ने ''हार रही लड़ाई'' की बात लिखी है। कुछ लोग ''परमेश्वर के प्रेम को कमाने के लिए'' लड़ते हैं, जबकि ''परमेश्वर के उस प्रेम को जो वह हमें देता है पूरे भरोसे के साथ स्वीकार करना'' सीखना आवश्यक है।[19]

(2) *इसे हमें प्रेम से भर देना चाहिए।* हम उससे जिसने हमसे इतना प्रेम किया है प्रेम क्यों नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 4:19)? जब हमें यह समझ आ जाती है कि हम ''विश्वास से धर्मी ठहराए जाते'' हैं, तो हमें ''उस पर अत्यधिक आश्चर्य होगा, जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, जो ऐसा आश्चर्य है कि ... [हमारी] आराधना में फैल जाता है,''[20] आराधना पूरा किया जाने वाला कर्त्तव्य नहीं बल्कि आनन्द ली जाने वाली आशीष होगी। ''फ़ज़ल अजीब'' जैसे गीतों का हमारे लिए नया अर्थ हो जाएगा!

(3) *इसे हमें कार्य के लिए आगे बढ़ाना चाहिए।* कइयों को इस बात से परेशानी है कि यदि हम ''विश्वास से धर्मी ठहराए जाने'' की बात सिखाते हैं तो लोग यह सोच लेंगे कि काम करने की आवश्यकता नहीं है, यानी आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि हम अगले अध्ययन में देखेंगे ''विश्वास से धर्मी ठहराया जाना'' की शिक्षा को सही ढंग से समझे जाने पर इसका परिणाम *बहुत* प्रयास होगा न कि कम। मसीह ने अपना सब कुछ मुझे दे दिया; मैं अपना सब कुछ उसे कैसे नहीं दे सकता?

सारांश

क्या परमेश्वर का ''हिसाब का प्रबन्ध'' सचमुच अद्‌भुत नहीं है? उम्मीद है कि आपको अद्‌भुत लगता है। इस चर्चा को हम अगले पाठों में जारी रखेंगे।

यह सम्भव है कि रोमियों 4 में पौलुस की शिक्षा आपके लिए भी वैसे ही नई है, जैसे बहुत साल पहले भाई थॉमस की क्लास में मेरे लिए थी। यदि आप इसे तुरन्त पूरी तरह नहीं समझते तो चिंता न करें। इस शृंखला के पहले पाठ में मैंने सुझाव दिया था कि रोमियों की पुस्तक 57 या 58 ईस्वी के लगभग लिखी गई थी। इसका अर्थ यह होगा कि यह कलीसिया की स्थापना के तीन दशक बाद लिखी गई। उन सब लोगों के बारे में सोचें, जो मसीही बन गए थे और रोमियों के नाम पौलुस का पत्र पढ़े जाने से बहुत पहले मर गए। मुझे इस बात की अधिक चिंता नहीं है कि आप रोमियों की पुस्तक को समझे बिना स्वर्ग में जा सकते हैं या नहीं क्योंकि मैं आपके साथ उन सच्चाइयों को बांट रहा हूं, जो आपको प्रभु के लिए वफ़ादार होने और बने रहने के लिए प्रोत्साहित कर सकती थी।

समुद्र के ऊपर उड़ रहे जहाज़ में बैठे दो लोगों की कल्पना करें। उनमें से एक शांत है, जिसे जहाज़ और पायलट पर पूरा भरोसा है जबकि दूसरा पूरे सफ़र के दौरान सहमा हुआ है। दोनों अपनी मंजिल पर सुरक्षित पहुंच जाते हैं; परन्तु पहला पूरी उड़ान का आनंद करता है जबकि दूसरे के लिए यह सज़ा है। रोमियों की पुस्तक को समझना ''स्वर्ग के सफ़र'' के लिए शक्ति ही नहीं दे सकता, बल्कि यह इस सफ़र का *आनन्द* लेने के लिए आपकी सहायता भी करेगा!

अन्त में मैं आपसे प्रभु के प्रेम को ग्रहण करने के लिए उत्साहित करूंगा, यदि आपने अभी तक उसे ग्रहण नहीं किया है। आप विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराए जाते हैं यदि आप सचमुच में यीशु में विश्वास रखते हैं और उसमें जो उसने आपके लिए किया है तो आज ही आज्ञापालन के द्वारा अपने विश्वास को सिखाएं।

टिप्पणियां

[1]KJV में 4:3-8 के शब्द का अनुवाद करने के लिए तीन शब्दों ''counted'' ''reckoned'' और ''impute'' (''imputeth'' भी) इस्तेमाल किया गया है। [2]रोमियों की पुस्तक में पहले हमने *logizomai* शब्द देखा है। 2:26 में इसका अनुवाद गिनी जाएगी और 3:28 में ''ठहरता'' किया गया है। [3]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 249. [4]जॉन आर. डब्लयू. स्टॉट, *द मैसेज आफ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ार द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 125. [5]ई. डी. बर्टन गलेशियंस: *इंटरनैश्नल क्रिटिकल कंमैंट्री* (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1921), 447. [6]''शारीरिक'' (*sarx*) शब्द का अध्ययन हम अगले एक अध्याय के संदर्भ में करेंगे। इस आयत में *sarx* का अर्थ इस पर निर्भर करता है कि वाक्य में ''शारीरिक'' कहां रखा गया है। [7]''पिता'' का अनुवाद मिश्रित शब्द *popator* से किया गया है जो *pro* (''पूर्व'') और *pater* (''पिता'') का जोड़ है। [8]बाद में अध्याय 4 में पौलुस ने अब्राहम को ''उन *सब का* पिता [*pater*] जो विश्वास करते हैं'' (आयत 11), चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, कहा। परन्तु अध्याय के आरम्भ में शारीरिक यहूदियों के साथ अब्राहम के सम्बन्ध पर ज़ोर दे रहा था। [9]*द इंटरलिनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: दि नैसले ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एल्फ्रेड मार्शल* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 612. [10]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कंमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 112 से लिया गया। इस विषय पर यहूदी उद्धरणों का नमूना डग्लस जे. मू, *दि* NIV एप्लीकेशन

कंमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 147 में मिलता है।

[11]*द इंटरलिनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* 612. [12]इस वाक्यांश का एक और संम्भावित अर्थ यह है कि यदि अब्राहम घमण्ड करता तो वह अपनी बढ़ाई कर रहा होता। [13]''कहता है'' के वर्तमानकाल में होने पर ध्यान दें। उत्पत्ति की पुस्तक 1500 साल से भी पहले लिखी गई थी, परन्तु पौलुस ने इसे *जीवित* पुस्तक माना (देखें इब्रानियों 4:12) जो उसके समय के लोगों में अभी भी *बात कर रही* थी। [14]''अब्राहम के चिह्नों पर चलना'' अब्राहम के विश्वास पर चर्चा देखें। [15]''अब्राहम की यात्राओं वाला देश'' वाला मानचित्र देखें। [16]उत्पति 15:6 से पहले और लोगों का विश्वास भी था (देखें इब्रानियों 11:4, 5, 7), परन्तु उत्पत्ति की पुस्तक में यह शब्द पहली बार मिलता है। [17]यह भाग 1995 जे. डी. थॉमस के मेरे स्मरणीय और बहुत से नोट्स पर आधारित है। [18]यदि आपके सुनने वाले बाइबल की इस कहानी से अपरिचित हैं तो आप उत्पत्ति 22:1-14 की संक्षिप्त समीक्षा दे सकते हैं। इब्रानियों की पुस्तक कहती है कि अब्राहम ने ''इसहाक को बलिदान चढ़ाया'' (इब्रानियों 11:17) चाहे उसने वास्तव में यह कार्य नहीं किया था, क्योंकि अब्राहम की पूरी इच्छा यह कार्य करने की थी (देखें उत्पत्ति 22:10)। [19]विलियम बार्कले, *द लेटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेयली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 60. [20]मू. 150.